राजभाषा कार्यशाला आयोजन

इस निदेशालय में दिनांक 28 मार्च, 2015 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया| इस कार्यशाला में कुल 31 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया | दो संसाधन व्यक्तियों को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया | श्री ए. एन. भार्गव, स्टेशन प्रबंधक, पश्चिमी रेलवे, जूनागढ़ द्वारा "सरकारी कामकाज में हिंदी का महत्त्व" विषय पर व्याख्यान दिया गया | यह व्याखान काफी रोचक था तथा सरकारी कामकाज में हिंदी से सरलता से कार्य कैसे किया जाये इस पर विस्तृत रूप से चर्चा की गयी | डॉ. के. पी. बाकु द्वारा "हिंदी शिक्षण: दशा एवं दिशा" विषय पर व्याख्यान दिया गया | जिसमें उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी, तथा भारतीय शिक्षा पद्दति में हिंदी के स्तर को अपनाने एवं बढ़ावा देने पर जोर दिया गया | दोनों व्यखानों के बाद प्रतिभागियों से फीडबैक लिया गया। उससे पता चला कि सभी व्याख्यान बहुत ही रोचक एवं जानकारी से परिपूर्ण थे। बाद में हिंदी में काम करने के लिए होने वाली कठिनाइयों पर चर्चा की गयी तथा इन कठिनाइयों को कैसे दूर किया जाये, पर भी चर्चा की गयी| डॉ. राधाकृष्णन टी. निदेशक एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने सभी को संबोधित किया एवं डॉ. के. पी. बाकु तथा श्री ए. एन भार्गव का हार्दिक आभार प्रकट किया, तथा साथ ही सभी उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों से अपील की कि जितना जिससे हो सके पत्राचार इत्यादि हिंदी भाषा में ही करें | तथा हिंदी में काम करने के लिए आने वाली कठिनायों को निरंतर हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन द्वारा हल करने का पूरा प्रयास किया जायेगा |

भाकृअनुप-मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में संपन्न "राजभाषा कार्यशाला"

इस निदेशालय में दिनांक 23 दिसम्बर, 2015 को "राजभाषा कार्यशाला" का आयोजन किया गया जिसमें इस निदेशालय के कुल 30 अधिकारियों/कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया था | इस कार्यशाला के वक्ता श्री दरवेश कुमार (प्रशासनिक अधिकारी एवं नामित-हिंदी अधिकारी) थे | उन्होंने काफी सरल भाषा में हिंदी का कार्यालय में प्रयोग संबंधित विविध पहलुओ को बहुत अच्छे ढंग से व्यक्त किया | उन्होंने एक छोटी सी स्पर्धा भी रखी और उसमे सफल कई प्रतिभागियों को इनाम भी दिया गया | सभी प्रतिभागियों को निदेशक द्वारा प्रमाण-पत्र भी दिए गए | इस कार्यशाला के लिए समन्वयन एवं संयोजन का कार्य श्री दरवेश कुमार एवं श्री एच. बी. लालवानी द्वारा किया गया | तथा इसमें श्री ए. डी. मकवाना, श्री अनिल कुमार एवं श्री लोकेश कुमार (तकनीकी सहायक) ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया | अंत में श्री एच. बी. लालवानी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया